International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

यमकेश्वर मन्दिर स्थिति, महिमा एवं माहात्म्य

डॉ. सुभाष चंद्र बडोला
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत, स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

Corresponding Author: * डॉ. सुभाष चंद्र बडोला

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22028761

सारांश

यमकेश्वर महादेव मंदिर की स्थिति महिमा एवं महत्व का वर्णन जनमानस की श्रद्धा में वर्णित है यमकेश्वर महादेव का वर्णन स्कंद पुराण केदारखंड महात्म्य तथा अन्य पुराणों में स्पष्ट रूप से किया गया है यह मंदिर उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जनपद में स्थित है जो अपनी महिमा से जाना जाता है जहां लोग अपनी अटूट श्रद्धा के साथ दर्शन और पूजन करते हैं तथा अपनी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं इस मंदिर का इतिहास मार्कंडेय ऋषि से जुड़ा हुआ है उन्होंने महामृत्युंजय मंत्र का जाप इसी स्थान पर किया था और मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 13-07-2026
- **Accepted:** 15-08-2026
- **Published:** 20-08-2026
- **IJCRM:** 5(4); 2026: 826-831
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

बडोला सु च. यमकेश्वर मन्दिर स्थिति, महिमा एवं माहात्म्य। Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):826-831.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: यमकेश्वर महादेव, द्वादश, ज्योतिर्लिंग, आराध्य, महात्म्य, उत्तराखंड, पौराणिक, यमराज, केदारखंड, सृष्टिक्रिया, पद्मपुराण, मार्कण्डेय, मृत्युंजय, हिमालय

© 2026 डॉ. सुभाष चंद्र बडोला. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

आदिदेव महादेव को सृष्टि का संहारकर्ता माना जाता है लेकिन वह एक दयालु देव भी हैं उनको आशुतोष के नाम से भी जाना जाता है आशुतोष का अर्थ होता है कि थोड़ी सी पूजा से भी जो संतुष्ट हो जाए, भगवान शिव की पूजा सारा संसार करता है ऐसे ही उनको देवाधिदेव नहीं कहा जाता वे हर मनुष्य की मनोकामना को पूर्ण करते हैं भगवान शिव द्वादश ज्योतिर्लिंग के रूप में संपूर्ण भारत वर्ष में विद्यमान है, हिमालय पर्वत की उपत्यका काम में स्थित केदारनाथ धाम भगवान शिव का परम प्रिय धाम है यमकेश्वर महादेव का मंदिर भी केदार खंड के अंतर्गत ही है केदार खंड की प्राचीनता एवं महात्म्य का वर्णन भगवान शिव ने स्वयं किया है यमकेश्वर महादेव उत्तराखंड की पौड़ी गढ़वाल जनपद के यमकेश्वर ब्लॉक में स्थित है यह मंदिर अपने महात्म्य के कारण जाना जाता है इस मंदिर में प्रतिवर्ष हज़ारों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं और अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं प्राचीन कथा के अनुसार इस स्थान पर मार्कण्डेय ऋषि ने तपस्या की थी और महामृत्युंजय मंत्र का जाप करते हुए मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी, इस मंदिर की पौराणिक कथा के विषय में ही यह लेख लिखा गया है

भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगो का महात्म्य शिव महापुराण की कथा में और जन मानस की श्रद्धा में छिपा हुआ है, आज इस लेख के माध्यम से अपने आराध्य देव भगवान शिव के एक ऐसे ही पौराणिक मंदिर के विषय में लिख रहा हूं जो मेरे गांव से 2 किलोमीटर की दूरी पर है यह शिव मंदिर उत्तराखंड के पौडी गढ़वाल जनपद के यमकेश्वर ब्लॉक में स्थित है यह मंदिर ऋषिकेश से 70 किलोमीटर दूर है इस मंदिर में हजारो श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं इस मंदिर में माघ महीने और श्रावण महीने में लगातर पूजन और अर्चन होता है लोग इस मंदिर में संतान की प्राप्ति हेतु पूजन अर्चन करते हैं यह मंदिर अपने पौराणिक महात्म्य को लेकर स्थित है।

यमकेश्वर मन्दिर का नामकरण यमराज द्वारा निर्मित होने के कारण हुआ। शब्द व्युत्पत्ति के आधार पर यम को ही यमक कहते हैं। (यम शब्द से कन् प्रत्यय = यमक) और यम के द्वारा स्थापित या निर्मित होने से यमकेश्वर नाम सार्थक होता है।[1]

यह क्षेत्र केदारखण्डान्तर्गत ही है और केदारखण्ड की प्राचीनता एवं महत्व का वर्णन करते हुए स्वयं भगवान् शिव कहते हैं कि यह क्षेत्र सब क्षेत्रों से उत्तम है। अपने ही समान इस स्थान को प्राचीन मानते हुए शिव कहते हैं कि ब्रह्ममूर्ति धारण करके इसी स्थान पर मैंने सृष्टिक्रिया आरम्भ की।[2]

इस प्रकार यह क्षेत्र देव-दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण है। ऐसे क्षेत्र में दुर्लभ मन्दिरों या तीर्थों का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यहां अनेक ऐसे स्थल हैं जो अभी तक प्रकाश में नहीं आये हैं या पुराणों के वर्णनों से कुछ विसंगति होने से जिनकी पहचान सुस्पष्ट नहीं हो पायी है। ऐसा ही स्थल है 'यमकेश्वर'। बदरी-केदार के मुख्य मार्ग से दूर होने के कारण यमकेश्वर मन्दिर प्रकाश में नहीं आ पाया। इस मन्दिर से सम्बन्धित कुछ पुराण-प्रसिद्ध तथा कुछ लोक प्रचलित कथाएँ हैं। यहाँ इन कथाओं का क्रमशः विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है! तत्पश्चात् कथा में स्थानभेद से उत्पन्न विसंगतियों के निराकरण पर विचार प्रस्तुत किया जायगा। सर्वप्रथम पद्मपुराण में वर्णित कथा का संक्षिप्त विवरण उद्धृत किया जा रहा है।

1. यम एव यमकः यमेन यमकेन वा स्थापितः ईश्वरः इति यमकेश्वरः ।

यम+कुन्=यमक जैसे बाल से बालक शब्द बनता है परन्तु अर्थ एक ही है वैसे ही यम और यमक के अर्थ में कोई अन्तर नहीं है।

2. रम्भा चाप्सरसां यद्वद्गन्धर्वाणां च तुम्बरुः।

क्षेत्राणां च तथा प्रोक्तं क्षेत्रं केदार संज्ञितम् ॥
स्कन्द पुराण॥
केदार माहात्म्य ॥१॥ १८ ॥
पुरातनो यथाहं वै तथा स्थानमिदं किल ।
यदा सृष्टि क्रियायां च मया वै ब्रह्ममूर्तिना ॥ स्कन्द पुराण॥
केदार खण्ड॥४१५॥
स्थितमत्रैव सततं परब्रह्म जिगीषया ।
तदादिकमिदं स्थानं देवानामपि दुर्लभम्॥४१६॥

पद्मपुराण उत्तरखण्ड में यह कथा इस प्रकार है-

ब्रह्मा जी के पुत्र कुत्स ऋषि तथा कर्दम ऋषि की पुत्री के मृगशृङ्ग नामक पुत्र हुए। मृगशृङ्ग निर्भय होकर कण्डूयन करते (खुजलाते या रगड़ते थे। अतः पिता ने उनका नाम मृकण्डु रखा। की सुवृत्ता नामक पत्नी से मृकण्डु नामक एक तेजस्वी पुत्र हुआ। तपस्यारत उनके शरीर में धर्मपत्नी मरुद्वती ने काशी में जाकर तप किया।[1] पत्नी के साथ तपस्या और नियमों का पालन मृकण्डु वृद्धावस्था को प्राप्त हो गए पर उनके कोई सन्तान नहीं हुई। सन्ततिहीन मृकण्डु और उनकी करते हुए उन्होंने भगवान शंकर को सन्तुष्ट किया। प्रसन्न होने पर पिनाकधारी शिव ने पत्नी सहिन मृकण्डु से वर माँगने के लिए कहा। मुनि ने कहा- परमेश्वर ! यदि आप मेरे स्तवन से सन्तुष्ट हैं तो सन्ततिहीन मुझे एक पुत्र का वर दीजिए। भगवान शंकर ने कहा कि तुम्हें उत्तम गुणों से हीन चिरंजीवी पुत्र चाहिए अथवा केवल सोलह वर्ष की अल्पायु वाला[2] एक ही सर्वज्ञ और गुणवान पुत्र? महर्षि मृकण्डु ने गुणहीन चिरंजीवी पुत्र की अपेक्षा अल्पायु वाले सर्वज्ञ पुत्र का वरण ही श्रेयस्कर समझा। भगवान शंकर ने कहा कि तुम्हारा पुत्र सोलह वर्ष की अल्पायु वाला, परम धार्मिक, सर्वज्ञ गुणवान, लोक में यशस्वी और ज्ञान का समुद्र होगा। ऐसा कह कर भगवान अन्तर्ध्यान हो गए और मुनिवर मृकण्डु इच्छानुसार वरदान पाकर प्रसन्न हो आश्रम में लौट आये।

मृकण्डु की पत्नी बहुत दिनों बाद गर्भवती हुई। पिता ने गर्भस्थ शिशु के क्रमशः पुंसवन और सीमन्तोनयन संस्कार किये। समय आने पर मरुद्वती के गर्भ से सूर्य सदृश तेजस्वी पुत्र का जन्म हुआ। चारों ओर देव दुन्दुभियाँ बज उठीं। साक्षात् वेदव्यास ने बालक का जातकर्म संस्कार कराया। ग्यारहवें दिन नामकरण, चौथे माह निष्क्रमण, छठे माह अन्न प्राशन तथा ढाई वर्ष की अवस्था में चूड़ा कर्म करके श्रवण नक्षत्र में बालक का कर्णबेध किया गया। ब्रह्मतेज की वृद्धि हेतु पाँचवें वर्ष में यज्ञोपवीत दिया गया तथा साङ्गोपाङ्ग वेद पढ़ाया।

बुद्धिमान मार्कण्डेय के सोलहवें वर्ष के प्रारम्भ होने पर मुनि मृकण्डु का हृदय शोक से कातर हो उठा, सम्पूर्ण इन्द्रियों में व्याकुलता छा गयी, वे दीनतापूर्वक विलाप करने लगे। पिता को अत्यन्त दुःखी और करुण विलाप करते देख मार्कण्डेय ने उनसे शोक-मोह का कारण पूछा। मार्कण्डेय मधुर वचन सुन कर मृकण्डु ने शोक का कारण बताया और कहा कि पुत्र! भगवान शिव ने तुम्हें केवल सोलह वर्ष की आयु दी है। उसकी समाप्ति का समय आ पहुँचा है, अतः मुझे शोक हो रहा है।

© 2026 डॉ. सुभाष चंद्र बडोला. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पितृवचन सुन मार्कण्डेय ने कहा कि आप मेरे लिए कदापि शोक न कीजिए। मैं ऐसा यत्न करूँगा कि जिससे अमर हो जाऊँगा। मैं सबको वाञ्छित फल प्रदान करने वाले, कल्याण स्वरूप, आशुतोष, मृत्यु को जीतने वाले, काल के भी काल, महाकालस्वरूप तथा कालकूट विष का पान करने वाले भगवान् शिव की आराधना करके अमरत्व प्राप्त करूँगा।

पुत्र की बात सुनकर पिता हर्षित एवं सन्तुष्ट हो गये। उन्होंने कहा कि वत्स! तुमने हम दोनों का शौक नष्ट करने हेतु भगवान् मृत्युञ्जय की आराधना रूप महान् उपाय का प्रतिपादन किया है, तुम उन्हीं की शरण में जाओ वे ही काल-संहारक हैं।

इस प्रकार माता-पिता की आज्ञा पाकर मार्कण्डेय जी दक्षिण समुद्र तट पर चले गये। वहाँ विधिपूर्वक अपने नाम से शिवलिङ्ग स्थापित कर, त्रिकाल स्नान करते हुए वे शिवपूजन करने लगे। पूजान्त में स्तोत्र पढ़कर वे नृत्य करते। उस स्तोत्र से कुछ ही दिन में भगवान् शिव सन्तुष्ट हो गये। बड़ी भक्ति और श्रद्धा से पूजन करते हुए उनकी आयु का अन्तिम दिन भी आ पहुँचा।

1. अन्यत्र काशी के स्थान पर हिमालय में जाकर मृकण्डु की तपस्या का वर्णन है।
2. किसी पुराण में आठ वर्ष तथा कहीं बारह वर्ष की अल्पायु का उल्लेख भी मिलता है।

उस दिन वे पूजा में तल्लीन हो ज्योंही स्तुति करने को उद्यत हुए उसी समय मृत्यु को साथ लिए महिषारूढ़ काल उन्हें लेने आ पहुंचा। लाल प्रान्त वाले नेत्रों से युक्त साँप बिच्छू ही जिनके रोम थे ऐसे बड़ी दाढ़ों से युक्त अत्यन्त विकराल मुख वाले, काजल सदृश काले यमराज ने समीप आकर उनके गले में कालपाश डाल दिया। मार्कण्डेय ने बहुत अनुनय-विनय की और कहा कि महामते ! मुझे जगदीश्वर के मृत्युञ्जय स्तोत्र का पूरा पाठ करने दीजिए, तब तक मेरी प्रतीक्षा कीजिए। हँसते हुए यमराज ने कहा कि काल किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। किसी पुरुष के कार्य के पूर्ण या अपूर्ण होने का विचार काल नहीं करता। जिसका काल नहीं आता है वह सैंकड़ों बाणों से बिंध जाने पर भी नहीं मरता तथा जिसका काल आ जाता है वह कुशाग्र के स्पर्श मात्र से भी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। मैं हजारों चक्रवर्ती राजाओं तथा सैंकड़ों इन्द्रों को भी अपना ग्रास बना चुका हूँ। अतः इस विषय में तुम्हें क्रोध नहीं करना चाहिए। मार्कण्डेय ने शिव की स्तुति में विघ्न न डालने के लिए बारम्बार प्रार्थना की। पुनः भगवान् मुत्युञ्जय के बल पर काल को फटकारा। उस पर काल आँखें फाड़-फाड़ कर उन्हें देखने लगे, मानो तीनों लोकों को निगल जायेंगे। क्रोधित हो बोले- हे दुर्बुद्धि ब्राह्मण ! गंगाजी में जितने बालू के कण हैं उतने ब्रह्माओं का इस काल ने संहार कर डाला है। अधिक कहने से क्या लाभ । मेरा बल और पराक्रम तो देखो। मैं तुम्हें अपना ग्रास बनाना चाहता हूँ। राहु द्वारा चन्द्रमा ग्रसने की भाँति गर्जन करते हुए काल ने मार्कण्डेय को हठपूर्वक आरम्भ किया। मार्कण्डेय शिवलिंग से लिपट गये। उसी समय परमेश्वर शिव उस लिंग से सहसा प्रकट हो गए। दिव्य रूपधारी शिव ने हुँकार भर कर प्रचण्ड गर्जना करते हुए तुरन्त ही यमराज के वक्षःस्थल पर लात मारी। मृत्युदेव उनके चरण प्रहार से भयभीत हो दूर जा पड़े। भयंकर काल को दूर पड़ा देख मार्कण्डेय ने पुनः उस स्तोत्र से भगवान् शंकर का स्तवन किया।

इस प्रकार स्तुति करने पर महादेवजी ने उन्हें अनेक कल्पों तक की असीम आयु प्रदान की । इस प्रकार भगवान् मृत्युञ्जय के प्रसाद से उन्होंने अमरत्व प्राप्त किया और अमर होकर इस पृथ्वी पर विचरने लगे। यमराज ने भी निकट में भगवान् शंकर की स्तुति की और शिव को प्रसन्न कर अपने लोक को चले गये।[1]

उपर्युक्त कथा की ही भाँति स्कन्द पुराण के अवन्ती खण्ड में 'मार्कण्डेयेश्वर माहात्म्य' के अन्तर्गत भी मृकण्डु ऋषि की तपस्या एवं मार्कण्डेय मुनि की उत्पत्ति का विवरण प्राप्त होता है। इसमें उल्लेख है कि सन्ततिरहित मृकण्डु ऋषि ने पुत्र की कामना से हिमालय में जाकर तप किया और भगवान शंकर के प्रसाद से ऐश्वर्य-ज्ञान सम्पन्न दीर्घायु एवं सर्वज्ञ-धर्मात्मा पुत्र मार्कण्डेय को प्राप्त किया। वहीं वन में लिंग बनाकर मार्कण्डेय ने महाकाल का स्तवन किया।[2]

1. संक्षिप्त पद्म पुराण । गीता प्रेस गोरखपुर। अध्याय- २४१ । पृष्ठ ८११। संवत् १०४४॥ स्कन्द०। अवन्ती । अ०-१६॥

1. मार्कण्डेयेश्वरं विद्धि षट्त्रिंशत्तममीश्वरम्।

यस्यदर्शनमात्रेण पुत्रवाञ्छायते नरः ॥१॥
ब्रह्मवंशसमुत्पन्नो मृकण्डो नाम तापसः ।
वेदाध्ययन सम्पन्नः सचापुत्रो बभूव ह ॥२॥
पुत्रार्थ चिन्तयामास कथं पुत्रो भवेदिति ।
अपुत्रस्य कुतो लोक इति वेदेषु पठ्यते ॥३॥
तस्मात्तपः करिष्यामि येन मे तनयो भवेत् ।
एवं संचित्य बहुधा स जगाम हिमालयम् ॥४॥
अथ केनापि कालेन निःसृतोऽहं त्वया सह ।

- क्रमशः

स्कन्द पुराणान्तर्गत केदारखण्ड के 'तुंगक्षेत्र माहात्म्य' नामक अध्याय में उल्लेख है कि तुंगनाथ क्षेत्र के निकट दक्षिण में गरुड़ तीर्थ है, गरुड़ तीर्थ के पश्चिम में मानसरोवर और उसके उत्तर में मर्कटेश्वर नामक प्रसिद्ध शिवमूर्ति है तथा उसके दक्षिण की ओर मृकण्डाश्रम है।[1]

श्री नृसिंह पुराण में भी मार्कण्डेय से सम्बन्धित एक कथा का उल्लेख मिलता है।[2]

कुछ विद्वानों का मत है कि स्कन्द पुराण केदारखण्ड में नीलकण्ठ महादेव तथा उसके निकटवर्ती मणिकूट पर्वत का वर्णन भी है। मणिकूट के निकट की उपत्यका में स्थित यमकेश्वर मन्दिर व उसके समीप मार्कण्डेय की तपःस्थली से सम्बन्धित प्रसंग भी इसमें सन्निहित हैं। जहाँ मृकण्डु ऋषि मार्कण्डेय को तप करने हेतु भेजते हैं। वेंकटेश्वर प्रेस मुम्बई के संस्करणों में तो उक्त प्रसंग प्राप्त नहीं हुआ और अन्य संस्करण मुझे उपलब्ध नहीं हो पाये। इस प्रसंग के आधार पर भी मार्कण्डेय की तपःस्थली, उनके द्वारा निर्मित सात कुण्ड, शतरुद्रा नदी आदि इसी स्थान से सम्बन्धित हैं। इनके मत के अनुसार कथा इस प्रकार है।

लिंगमध्याद्वरारोहे स च प्रोक्तो द्विजोत्तमः ॥३१॥
शर्वोऽहमिति जानीहि ब्रूहि किं करवाणि ते ।
आवां पुराप्रसन्नो ते ज्ञातं तव विचेष्टितम् ॥३२॥
यमिच्छसि वरं ब्रह्मस्तदद्य प्रददामि ते।

© 2026 डॉ. सुभाष चंद्र बडोला. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मया प्रोक्तः प्रसन्नेन मुनिः परम विस्मितः ॥३३॥
प्रह्वः प्राह सुहृदये स हृष्टो मुनि सत्तमः ।
अपत्यहेतोर्देवेशो किमलभ्यं भवेन्मम ॥३४॥
मया प्रोक्तस्तदा देवि मृकण्डो मुनि सत्तमः ।
अयोनिजस्ते तनयो मानुषो वै भविष्यति ।
ऐश्वर्य, ज्ञान सम्पन्नो दीर्घायु सर्ववित्सुधी ॥३५॥
एतस्मिन्नतरे देवि प्रादुर्भूतो महातपाः ।
पुत्रः परमधर्मात्मा मार्कण्डेयो महामुनिः ॥३६॥
इत्युक्तेन तेन लिङ्गेन मार्कण्डेयो महातपाः ।
तपश्चचार तत्रैव महाकाल बने स्थितः ॥४३॥

- स्कन्द पुराण। वेंकटेश्वर प्रेस, मुंबई

1. ततो वै दक्षिणेभागे मृकण्डाश्रमके वरे ।
देवी महेश्वरी नाम्ना भक्तानां प्रीतिवर्द्धिनी ॥ स्कन्द पुराण । केदार० अ० ५०।१३॥

2. मृगोः ख्यात्यां समुत्पन्नो मृकण्डुर्नाम वै सुतः।

सुमित्रा नाम वै पत्नी मृकण्डोऽस्तु महात्मनः॥ नृसिंह० पु० अ०७।१०॥
धर्मज्ञा धर्मनिरता पति शुश्रूषणे रता ।
तस्यां तस्य सुतो जातो मार्कण्डेयो महामतिः॥११॥
भृगुपौत्रो महाभागो बालत्वेऽपि महामतिः ।
ववृधे वल्लभो बालः पित्रा तत्र कृत क्रियः ॥१२॥
तस्मिन् वै जातमात्रे तु आगमी कश्चिदब्रवीत्।
वर्षे द्वादशमे पूर्णे मृत्युरस्य भविष्यति ॥१३॥
भूतापहारिणं मृत्युं जेतुमिच्छामि साम्प्रतम्।
शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि तत्रोपायं वदस्व नः ॥३१॥

2. मणिकूटे नगप्रान्ते शतरुद्रा सरित्तटे ।

तपश्चचार धर्मात्मा मार्कण्डेयो महामुनिः ।
पितुर्वचन निर्देशात् आत्मनो प्रियकाम्यया ।
सप्तपल्वलाः सष्णात् कृत्वा मूर्ति तु सैकतीम् ॥ स्कन्द पुराण ॥

-केदार खण्ड ।

महामुनि मृकण्डु ने ग्यारहवें जन्मदिन पर मार्कण्डेय को मृत्यु पर विजय प्राप्त करने हेतु इसी क्षेत्र में भेजते हुए कहा कि मणिकूट पर्वत के निकट शतरुद्रा नदी का उद्गम स्थल है; वहाँ पीपल के वृक्ष के नीचे बालू का लिङ्ग बनाकर तुम उसका यजन करो और महामृत्युञ्जय का जप करो तो एक वर्ष के अन्दर शीघ्र ही दीर्घायु को प्राप्त कर लोगे। पिता की आज्ञानुसार बालू का लिंग बनाकर मार्कण्डेय भगवान् महामृत्युञ्जय का जप करने लगे।

मृत्युञ्जय भगवान् की कृपा से उनके उत्तर की ओर सात छोटे-छोटे जलपूर्ण तालाब बन गये; जो आज भी प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होते हैं। मृत्यु की तिथि आने पर इसी स्थान पर यमराज आ और बलपूर्वक मार्कण्डेय के प्राण हरण करने लगे। पहले मार्कण्डेय और यम में वार्तालाप हुआ और उसके बाद लिंग से प्रकट हुए शिव ने यम पर चरण प्रहार किया। यम से रार (झगड़ा) होने के कारण ही इस स्थान का नाम यमरार (जमरार) पड़ा; जो कालान्तर में 'जमराड़ी' या 'जिमराड़ी' नाम से प्रसिद्ध हो गया है। भगवान् के चरण प्रहार से यमराज जिस स्थान पर गिरे थे उस स्थान का नाम 'यमालय' अथवा 'यामल' पड़ा जो कालान्तर में 'जामल' नाम से प्रसिद्ध हुआ। वहाँ से गिरते पड़ते यमराज ने वर्तमान यमकेश्वर नामक स्थान में आकर भगवान् शंकर के रूद्र रूप की स्तुति प्रारम्भ कर दी। भगवान् आशुतोष प्रसन्न हो गये और यमराज से बोले कि जहाँ मेरा मृत्युञ्जय जप होता हो, उस स्थान पर तुम्हें नहीं जाना चाहिए। अन्त में यमराज की स्तुति से प्रसन्न होकर शिव ने कहा कि जिस स्थान पर तुम खड़े हो उस स्थान पर मेरी स्वयंभू लिंग रूपी मूर्ति उत्पन्न हुई है; उसका तुम अर्चन-पूजन करो। यह मूर्ति तुम्हारे नाम से ही प्रसिद्ध होगी। इस शिवलिङ्ग का जो पूजन करेगा वह बड़ी से बड़ी अपमृत्यु एवं अकाल मृत्यु को टाल देगा। जिन-जिन कामनाओं को लेकर जो मनुष्य यहाँ मेरा स्तवन करेगा उसकी वह कामना अवश्य पूर्ण होगी। यमराज ने एक वर्ष तक इस शिवलिङ्ग के सामने घोर तपस्या की। महामृत्युञ्जय प्रसन्न हुए तथा उसी दिन से यमकेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए।

उपर्युक्त सभी तथ्यों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पुराणोक्त मार्कण्डेय की तपस्थली एवं यमराज द्वारा स्थापित शिव का मन्दिर वर्तमान 'यमकेश्वर' में ही है। कथाओं में कुछ विसंगतियां तो प्राप्त होती हैं पर उनका कारण कल्पभेद होता है। विद्वान् लोग भली भाँति जानते हैं कि कल्पभेद से विभिन्न पुराणों की कथाओं एवं उनमें वर्णित स्थलों में भिन्नता आ जाती है। पद्म पुराण में मार्कण्डेय के दक्षिण समुद्र तट पर तपस्या करने का उल्लेख है। इस सम्बन्ध में विचारणीय प्रश्न यह है कि हिमालय स्थित पिता मृकण्डु के आश्रम से दक्षिण समुद्र तट तक तपस्या के लिए जाना असंगत प्रतीत होता है। यह तो पुराणों से स्पष्ट हो चुका है कि तुंगनाथ (चमोली) के पास महर्षि मृकण्डु का आश्रम था, यहीं से वे काशी तपस्या करने गये और वर पाकर आश्रम लौट आये। दूसरे कल्प में हिमालय पर ही उन्होंने तपस्या की थी।

भू-वैज्ञानिक अनुसन्धानों से स्पष्ट हो चुका है कि पूर्व काल में हिमालय के पास एक सागर था। दो महाद्वीपों (गोंडवाना और अंगारालैण्ड) के मध्य 'टिथीज सागर' लहराता था। इस टिथीज सागर के तट पर ही मार्कण्डेय ने तप किया था। यह उस काल की घटना है जब हिमालय की उत्पत्ति हो गयी थी और टिथीज सागर धीरे-धीरे पूर्व की ओर हट रहा था। यमकेश्वर का क्षेत्र ही वह तटवर्ती क्षेत्र था क्योंकि इस क्षेत्र से कुछ ही दूरी पर देश का मैदानी भाग (बिजनौर) प्रारम्भ हो जाता है। इस प्रकार पौराणिक कथाओं, जनश्रुतियों तथा भू-वैज्ञानिक आधारों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यमकेश्वर एक प्राचीन धार्मिक स्थल है।

यमकेश्वर मन्दिर के निकट का टीला[1] भी एक प्राकृतिक शिवलिंग के समान है जिसके चारों ओर जल बहता है। कुछ वयोवृद्ध इसे यमद्वीप भी कहते हैं। मन्दिर के निकट पहले एक बड़ा कुण्ड था, जो अब मिट्टी पत्थर से ढ़क गया है। इसे यमकुण्ड कहते हैं। मन्दिर के सामने बहने वाली छोटी सी नदी का नाम शतरुद्रा अथवा सत्यभामा है। स्थानीय भाषा में इसे 'सतेड़ी' नदी कहते हैं। इसका उद्गम 'जिमराड़ी' है; जहाँ मार्कण्डेय ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी तथा जहाँ सात कुण्ड वर्तमान में भी विद्यमान हैं। कहा जाता है कि इस नदी में सौ शिवलिंग थे। जिनमें से केवल एक यमराज के द्वारा स्थापित शिवलिंग ही प्राप्त हुआ है। इस सम्बन्ध में भी एक लोक प्रचलित जनश्रुति प्रसिद्ध है।

यमकेश्वर के निकट ही काँडा नामक गाँव है। इस गाँव की एक वृद्धा ने सर्वप्रथम यमकेश्वर के शिवलिंग का साक्षात्कार किया था।[2] यह उस काल की घटना है जब लोग कन्दमूल फलों का आहार में विशेष रूप

© 2026 डॉ. सुभाष चंद्र बडोला. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

से प्रयोग करते थे। उन दिनों यमकेश्वर के आस-पास झाड़ियों और वनों की अधिकता थी। एक दिन उक्त बुढ़िया वाराही कन्द (जिसे स्थानीय भाषा में गींठी कहते हैं।) लेने इस स्थल पर आयी । झाड़ियों में गींठी खोदते समय एकाएक उसकी कुदाल की नोंक एक पत्थर पर लगी। 3 पत्थर पर खरोंच लगते ही उससे दूध की धार से प्रकट होकर शिव के दिव्य स्वर ने कहा कि बुढ़िया तू यहाँ क्या लेने आयी है ? तुझे क्या चाहिए ? भोली-भाली बुढ़िया जो ईश्वर की माया से अनभिज्ञ थी बोली- महाराज ! मुझे गींठी चाहिए। उस दिव्य स्वर ने बुढ़िया से कहा कि जाओ घर में ही तुम्हें अपनी इच्छित वस्तु मिल जायेगी।

तत्पश्चात् बुढ़िया सीधे घर चली गयी। पहले से ही अचम्भित बुढ़िया ने घर जाकर देखा कि उसका घर आंगन गींठी से भरा पड़ा था। गींठी पाकर अति प्रसन्न हुई बुढ़िया ने यह विचित्र घटना सभी ग्रामवासियों को सुनायी। उत्सुकतावश सभी लोग उक्त स्थल पर गये और उस लिंग का निरीक्षण करने लगे। चारों ओर से खोदने पर भी उसका अन्त नहीं मिला तो अपने क्षेत्र में महादेव के प्रकट होने पर प्रसन्न होकर लोग घर चले गये और शनैः शनैः वहाँ कुछ निर्माण करने का विचार करने लगे । इस बीच निकटस्थ बडोली गाँव वालों को महादेव की दिव्य वाणी भी सुनाई दी कि मैं इस क्षेत्र में प्रकट हुआ हूँ। अतः मेरे स्थल का उत्तम संस्कार कर पूजन अर्चन की व्यवस्था कर दी जाये। तदन्तर कुछ बुद्धिजीवी तथा दूरदर्शी सज्जनों ने इस स्थल पर आकर शिवलिंग के चारों ओर विधिपूर्वक पवित्रीकरण कर एक छोटा सा मन्दिर बना दिया। बाद में नित्य पूजन-अर्चन एवं मन्दिर की देख-रेख के लिए धर्मपरायण एवं सुपात्र पुजारी (महन्त जी) की व्यवस्था भी कर दी। पूर्व में यमकेश्वर महादेव लोकहित में बोलते भी थे। अतः गढ़वाली भाषा इन्हें **"बुलान्दा महादेव"** कहते थे। अशरीरी वाणी (आकाशवाणी) द्वारा लोगों को अभीष्ट तथा अनिष्ट से सावधान भी कर देते थे परन्तु कालान्तर में उनका बोलना बन्द हो गया। कहा जाता है कि पुत्र शोक से आहत किसी व्यक्ति ने मृत बालक का संस्कार मन्दिर के समक्ष ही कर दिया। शिव ने ही यह बालक मुझे दिया और शिव नें ही ले लिया। ऐसा सोच कर खिन्न मन से उस व्यक्ति नें यह कार्य किया। इस घटना के पश्चात् वह आकाशवाणी तो नहीं सुनाई दी परन्तु महादेव का माहात्म्य अक्षुण्ण बना रहा।

1. इस टीले की आकृति 'ॐ' अक्षर की है जिसके ऊपर बिन्दु रूप में शिवलिंग या मन्दिर है।
2. गढ़वाल में अधिकांश लोग बाहर से आये हैं। अतः इस क्षेत्र में इससे पूर्व लोगों को यम द्वारा स्थापित शिवलिंग का ज्ञान नहीं था।
3. कुदाल की खरोंच का चिह्न अभी भी शिवलिंग पर अंकित है।

यमकेश्वर में शिवलिङ्ग के प्रकट होने के बाद कुछ समय तक उसका पूजन-अर्चन उसी रूप में होता रहा। कुछ समय पश्चात् यमकेश्वर के निकट ही पम्बा गाँव के एक धार्मिक एवं श्रद्धालु सज्जन स्व० मूसा साहूकार ने उक्त शिवलिंग के चारों ओर एक छोटे मन्दिर का निर्माण कराया। : मन्दिर का पुनरुद्धार 'जामल' गाँव के निवासी स्वनामधन्य स्व० डूंगरसिंह ने कराया। लोक धानस में श्रद्धा के बढ़ने के साथ-साथ धीरे-धीरे मन्दिर के आकार-प्रकार में भी वृद्धि होती गई। देखते-देखते दानी और श्रद्धालुओं ने मन्दिर को वर्तमान स्वरूप प्रदान कर दिया। आज मन्दिर के आस-पास धर्मशालाओं का निर्माण भी स्थानीय दानी सज्जनों एवं श्रद्धालुओं द्वारा करा दिया गया है। निरन्तर अर्चन-पूजन होने से तो किसी भी स्थान की महिमा बढ़ जाती है। फिर ऐसे सिद्ध स्थलों का तो क्या कहना जहाँ; देवताओं ने स्वयं पदार्पण किया हो। यमकेश्वर महादेव की महिमा भी निरन्तर पूजन-अर्चन एवं जप-तप से बढ़ती ही जा रही है।

प्रतिवर्ष श्रावण मास के प्रथम सोमवार से अन्तिम सोमवार तक इस मन्दिर में श्रद्धालुओं तथा जपार्थियों की विशेष भीड़ रहती है। स्थानीय लोग अपने वर्ष भर के दु:ख-संकट तथा आधि-व्याधि से मुक्ति के लिए अपने पुराहितों से रुद्रीपाठ तथा महामृत्युञ्जय का जप कराते हैं। मन्दिर के चारों ओर आसनों पर बैठे ब्राह्मणों द्वारा वेद मन्त्रों के उच्चारण से सारा वातावरण देवमय सा हो जाता है साथ ही धूप-दीप तथा हवन कुण्ड से निकलने वाले धुँए की सुगन्धि से सारी घाटी पवित्र सी हो जाती है। अन्तिम सोमवार को दर्शनार्थियों एवं श्रद्धालुओं का मेला सा लग जाता है। मृत्यु, अपकीर्ति या अकाल मृत्यु से बचने के लिए तथा सन्तान प्राप्ति के लिए किये गये जप यहाँ विशेष रूप से सफल होते हैं। जो दम्पती भक्ति-भाव से यहाँ सन्तान प्राप्ति हेतु घंट स्थापन करते हैं वे कभी निराश नहीं होते हैं। इसके अतिरिक्त जो जिस कामना और श्रद्धा से यहाँ आता है वैसा ही फल पाता है।

वर्तमान कोलाहल और प्रदूषण भरे युग में शान्ति प्रिय साधकों तथा ध्यान जप करने वालों के लिए यह स्थल अत्यधिक निरापद एवं उपयुक्त है। श्रावण और माघ मास के अतिरिक्त मन्दिर में पूर्णतः शान्ति एवं नीरवता रहती है। यमकेश्वर मन्दिर का परम पावन स्थल साधना के लिए और यमकेश्वर महादेव मनोवांछित भोग अथवा मोक्ष देने के लिए प्रसिद्ध है।

अन्त में कलिकाल के पाश और यम यातनाओं से मुक्ति हेतु उन्हीं महामृत्युञ्जय देव (यमकेश्वर महादेव) को शतशः प्रणाम करते हैं।

मृत्युञ्जय ! महारुद्र ! त्राहि मां शरणागतम् ।
जन्म-मृत्यु जरा-रोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥

'यमकेश्वर महादेव मन्दिर' यमराज द्वारा स्थापित है जिसके प्रमाण स्वरूप इस क्षेत्र में गाँवों के नामकरण हुए हैं।

यमराज से सम्बन्धित नाम-जिमराड़ी, जामल तथा जमकेश्वर (यमकेश्वर) हैं। मृकण्डु तथा मार्कण्डेय से सम्बन्धित क्षेत्र होने से गाँवों के नाम क्रमशः काण्डा, बुकण्डी, काण्डई, काण्डी आदि प्राचीन काल से ही जाने जाते हैं। महादेव से सम्बन्धित समीपवर्ती बडोली गाँव के खेतों का नाम "देव खेत" (देवक्षेत्र) भी पूर्वकाल से ही जाना जाता है। देवभूमि के इस क्षेत्र में स्थित उपर्युक्त गाँवों के नाम मन्दिर के यथार्थ इतिहास को प्रमाणित करते हैं, ऐसा मेरा विश्वास है। वर्तमान में यमकेश्वर महादेव मंदिर का पुनर्निर्माण 2018-19 में श्रद्धालुयो के द्वार फिर से किया गया है जिसके करण मंदिर का स्वरूप बदल गया है यह मंदिर आज भी अपने पौराणिक महात्म्य को लेकर स्थापित है।

महाकाली मन्दिर

यमकेश्वर महादेव के वाम पार्श्व में महाकाली का मन्दिर भी है। यह मन्दिर अधिक प्राचीन नहीं है। इसकी स्थापना के सम्बन्ध में वयोवृद्ध लोग एक रोचक किन्तु आश्चर्यजनक वृतान्त सुनाते हैं। यह विश्वसनीय घटना अधिक प्राचीन नहीं है और किसी भी प्रकार से अतिरंजित नहीं है।

यमकेश्वर शिवालय में किसी समय एक सिद्ध तान्त्रिक 'बाबा जन्दोगिरि' आये। उनकी सिद्धि व भक्ति भावना से स्थानीय लोग प्रभावित थे परन्तु कुछ लोग उनकी चामत्कारिक शक्ति क प्रदर्शन देखना चाहते थे। अतः उन लोगों ने बाबा से निवेदन किया कि बाबा

© 2026 डॉ. सुभाष चंद्र बडोला. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

यदि आपमें कुछ सिद्धि या शक्ति है तो यहाँ काली को बुला कर स्थापना कर दीजिए। बाबा ने उन लोगों की बात स्वीकार कर ली और कहा कि काली का आह्वान तो मैं कर लूंगा परन्तु कुछ व्यक्ति जो निर्भीक और दृढ़ हृदय के हों वे मेरे निकट बैठ जायें। इस साधना में बैठने के पश्चात मैं अनुष्ठान के पूर्ण होने तक आसन पर ही बैठा रहूँगा अन्यथा क्रिया खण्डित हो जायेगी और भयंकर अनिष्ट भी हो सकता है। काली को अर्पण करने हेतु जो-जो सामग्री मैं आपसे माँगूंगा आप मुझे पकड़ाते रहना। सहर्ष ही कुछ लोग इस कार्य को करने के लिए तैयार हो गए। पूजन, हवन एवं अर्पण की सम्पूर्ण सामग्री मंगाकर बाबा ने अपने चारों ओर रख ली और आसन जमाकर बैठ गये। समीप बैठे तथाकथित निर्भय लोगों को बाबा ने पुनः सचेत किया कि तुम लोग किसी प्रकार भी भयभीत न होना और मेरे आसन से दूर-दूर की सामग्री मेरे संकेतानुसार मुझे पकड़ाते रहना। तुम्हारा कुछ भी अनिष्ट नहीं होगा। ऐसा कहकर बाबा ने अनुष्ठान प्रारम्भ कर दिया।

बाबा ने मन्त्र-तन्त्रों से महाकाली का पूजन, स्तवन एवं जप प्रारम्भ कर दिया। शनैः शनैः काली के आह्वान मन्त्रों का उच्चारण किया। क्षणभर पश्चात् घाटी में भयंकर आँधी तूफान तथा विचित्र अट्टहासयुक्त आवाजें सुनाई देने लगी। वातावरण भयावह बनता जा रहा था और निर्भीक लोगों का साहस क्षीण होता जा रहा था। सुदूर स्थित क्षेत्र (नालीखाल) से एक भयंकर किलकारी की ध्वनि ने उन व्यक्तियों के बचे खुचे साहस को भी तोड़ दिया। एक-एक करके सभी लोग भाग गये परन्तु बाबाजी तन्मयता से अपने अनुष्ठान में लगे रहे। पुनः निकटस्थ गाँव दमराड़ा विद्यालय के पास एक और दिल दहलाने वाली किलकारी की ध्वनि ने घाटी को गुंजायमान कर दिया। बाबाजी अनवरत रूप से विधानानुसार क्रियाएँ सम्पन्न करते रहे। क्षणभर पश्चात् महाकाली बाबा के समक्ष उपस्थित हो गयी। बाबाजी ने विभिन्न भोग सामग्रियाँ काली को अर्पित कीं। जहाँ तक उनका हाथ पहुँचा उन्होंने सारी सामग्री प्रदान कर दी। आसन से उठना निषिद्ध था। अतः उन्होंने काली का भोग पूरा करने के लिए अपने हाथ-पाँव से मांस काट-काट कर अपना बलिदान प्रारम्भ कर दिया। भक्त की अगाध श्रद्धा, अदम्य साहस एवं शरीरार्पण देख माँ काली प्रसन्न हो गयी और बाबा से वर माँगने के लिए कहा। बाबा को क्या चाहिए था, नश्वर शरीर का लोभ त्याग कर उन्होंने माँ से कहा कि आपका दर्शन हो गया यही मुझे उत्तम वरदान है परन्तु आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरी प्रार्थना स्वीकार कर इस स्थान पर प्रतिष्ठित हो जाइये। एवमस्तु कहकर माँ महाकाली उस स्थान पर प्रतिष्ठित हो गयी। महाकाली के वरदान से बाबा जन्दगिरि भी अमर हो गये। महाकाली मन्दिर के पार्श्व स्थल में बाबा की समाधि के ऊपर एक छोटा सा मन्दिर आज भी उनके त्यागमय बलिदान का स्मारक है। भगवान् शिव और महाकाली उस महान् आत्मा का भी धूप, दीप, नैवेद्य एवं पुष्पों से आज भी पूजन करते हैं। पूजन के साथ-साथ भक्त लोग

जन्दगिरि बाबा द्वारा स्थापित यह काली मन्दिर एक सिद्ध पीठ की भाँति प्रसिद्ध होकर जप, तप तथा श्रद्धा का केन्द्र बन गया है। इस मन्दिर को भी भक्तजनों ने जीर्णोद्धार करके आधुनिक रूप दे दिया है। श्री सुखदेव बडोला (ग्राम- डांडा दमराड़ा निवासी) ने जून 1990 में महाकाली मन्दिर का पुनर्निमाण कराया। मन्दिर के आगे और पीछे दो हवन कुण्ड भी निर्मित किये गये हैं जिनमें पूजन के पश्चात् भक्तगण हवन करते हैं। वर्तमान में महाकाली मंदिर का पुनर्निर्माण 2021 में ग्राम बडोली और अन्य श्रद्धालुयो के द्वारा फिर से मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया है मंदिर के सामने भगवान गणेश की मूर्ति 2023 में श्रद्धालुयो के द्वारा स्थापित हुई है जो मंदिर की शोभा बढ़ा रहे हैं।

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे । सर्वस्यार्ति हरे देवि ! नारायणी नमोऽस्तुते ॥

विश्व का कल्याण करने वाली, शरणागत वत्सला महाकाली सबके दुःखों को दूर कर शुभ कल्याण प्रदान करें

संदर्भ ग्रन्थ

1. कृष्णकुमार, सम्पादक. केदारखण्डपुराण. भाग 1-4. कनखल, हरिद्वार: प्राच्यविद्या अकादमी; 1995.
2. पद्मपुराण. गोरखपुर: गीता प्रेस; संवत् 2060.
3. तारिणीश झा, सम्पादक. ब्रह्मवैवर्तपुराण. प्रयाग: हिन्दी साहित्य सम्मेलन; 1984.
4. सत्यव्रतसिंह, अनुवादक. मार्कण्डेयपुराण. नैनीताल: वैदिक अध्ययन अनुसंधान संस्थान; 1984.
5. सत्यव्रतसिंह, अनुवादक. मार्कण्डेयपुराण. कार्यशाला ग्रन्थ. प्रयाग: हिन्दी साहित्य सम्मेलन; 1996.
6. गोपालदत्त पाण्डेय, सम्पादक. मानसखण्ड. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन; 1989.
7. वराहपुराण. मुंबई: वेंकटेश्वर मुद्रणालय; 1980.
8. विष्णुपुराण. गोरखपुर: गीता प्रेस; संवत् 2051.
9. स्कन्दपुराण. मुंबई: वेंकटेश्वर मुद्रणालय; 1972.
10. शिवमहापुराण. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान; 1995.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Corresponding Author

डॉ. सुभाष चन्द्र बडोला संस्कृतविषयस्य सहायकप्राध्यापकः सन्ति। ते देहरादून-नगरस्थे स्पर्श-हिमालय-विश्वविद्यालये अध्यापनस्य शैक्षणिककार्यस्य च क्षेत्रे संलग्नाः सन्ति। संस्कृतभाषा, संस्कृतसाहित्यं, भारतीयसंस्कृतिः, प्राच्यविद्याः च तेषां विशेषकार्य क्षेत्रम् अस्ति। ते अध्यापनकार्ये, अनुसन्धाने, शैक्षणिकक्रियाकलापेषु च सक्रियतया योगदानं ददति तथा संस्कृतभाषायाः प्रचारप्रसारे च महत्त्वपूर्णं योगदानं कुर्वन्ति।

© 2026 डॉ. सुभाष चंद्र बडोला. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/